

## सहस्राब्दी

अनंतकाल में अंतर्दृष्टि

### अनन्तकाल हमारी आत्मा के (डी.एन.ए) पर लिखा गया है –

हम अब 'अनन्तकाल में अंतर्दृष्टि के पाँचवे अध्ययन पर पहुँच गए हैं, और मैं आशा करता हूँ कि अब तक आप अनन्तकाल के बारे में काफ़ी समझ चुके होंगे और प्रभु यीशु के क्रूस के द्वारा खरीदी हुई नियति को पूर्णतः समझ चुके होंगे। कुछ हद तक हम में से बहुत अपने अंत मन में यह नहीं समझ पाते की केवल यही एक छोटे समय का जीवन है जो हम इस पृथ्वी पर जी हैं। जीवन की चुनौतियों को देखते हुए जब हम बारीकी से चीजों को परखते हैं और उनके प्रमाण देखते हैं हम पाते हैं कि जो सिद्धांत सृष्टिकर्ता को नकारते हैं वह मानना तर्कविरुद्ध है। ऐसे कई सवाल हैं जिनका उत्तर विज्ञान नहीं दे सकता। हमारा हृदय हमें यह बताता है कि जीवन में ऐसा बहुत कुछ है जिसका अनुभव हमने अभी तक यहाँ नहीं किया है। राजा सुलेमान जिन्हें सबसे चतुर माना जाता था कहते हैं:-

उसने सब कुछ ऐसा बनाया कि अपने अपने समय पर वे सुन्दर होते हैं; फिर उसने मनुष्यों के मन में अनादि-अनन्त काल का ज्ञान उत्पन्न किया है, तौभी काल का ज्ञान उत्पन्न किया है, वह आदि से अन्त तक मनुष्य बूझ नहीं सकता। (सभोपदेशक ३:११)

पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर सुलेमान ने परमेश्वर की रचनात्मकता पर बोला, कि उस ने मनुष्यों के मन में अनादि-अनंतकाल का ज्ञान उत्पन्न किया है। "फ्रैन्च बाईबिल" में कहा गया है कि "ईश्वर ने अनन्तकाल के विचार हमारे हृदय में स्थापित किए हैं" प्रिन्स चार्ल्स ने एक बार मनुष्य की आत्मा के अन्दरूनी खालीपन के बारे में कहा था, "चाहे विज्ञान की कितनी भी उपलब्धियाँ क्यों न हो, फिर भी कहीं न कहीं आत्मा की गहराई में लगातार एक चिन्ता रहती है, कि कुछ छूट गया है, या कुछ कमी है"। राजकुमारी डायना एक सभा में बोली थी, "आज के जीवन में लोगों के लिए आधुनिक चाल चलन में अस्तित्व बनाने व उसमें जीने का फल है एक भारी सूनापन व अकेलेपन को बुलावा देना।" उन्होंने कहा, "वह जानते हैं कि कुछ कमी है।" हमारे हृदय में जब तक कि हम प्रभु यीशु के पास नहीं आते हैं, तब तक हमें उस खालीपन का एहसास होता है और हम उसे ड्रग्स (नशे), शाराब, सैक्स शान्ति, रुपये पैसे और झूठे दिखावे से संतुष्ट करते हैं परन्तु हमें संतुष्टि नहीं मिलती है, क्योंकि हम उस खाली स्थान के साथ ही रहे गए हैं। जैसे कि "ब्लेज़ पास्कल" जो एक फ्रैन्च दार्शनिक व गणितज्ञ थे, ने लिखा है, "हर एक व्यक्ति के अन्दर ईश्वर ने परमेश्वर के आकार का एक खाली स्थान छोड़ा है।" सी.एस.लूईस ने अपनी पुस्तक "मीयर क्रिस्चैनिटी" में लिखा है - जीव जन्तु तभी लालसाओं के साथ जन्म लेते हैं जब उन लालसाओं को संतुष्ट किया जा सकता है। एक छोटा बच्चा भूखा होता है, तो उसके लिए भोजन उपलब्ध है। एक बत्तख का बच्चा तैरना चाहता है, तो उसके लिए पानी उपलब्ध है। व्यक्ति के जीवन में यदि शारिरिक इच्छा को पूर्ण करने की इच्छा होती है, तो उसके लिए यौन संबन्ध उपलब्ध है। यदि मुझे एक ऐसी इच्छा हो तो इस पृथ्वी पर पूरी न हो सके तो मैं यह समझूंगा कि शायद मैं किसी दूसरी दुनिया के लिए बना हूँ। यदि हम उन इच्छाओं को किसी भी सांसारिक सुख से पूरा न कर सकें तो इसका मतलब यह नहीं की संसार एक छालावा है। शायद वह इच्छा सांसारिक सुखों से पूरी नहीं हो सकती है, बल्कि उसको इसलिए जगाया जाता है कि वह सही चीज़ की ओर इशारा कर सके। पाँचवीं शताब्दी के दार्शनिक अगस्टीन ने लिखा है, हमारे हृदय तब तक शान्त नहीं होता, जब तक हमें तुझ में विश्राम नहीं

मिलता।" यह खोया हुआ "टुकड़ा" परमेश्वर ही है। वह जीवित जल है और जीवन की रोटी है। वही है जो हमें पूरी तरह से संतुष्ट कर सकता है। हागै भविष्यद्वक्ता ने लिखा है, और मैं सारी जातियों को कम्पकपाऊंगा, और सारी जातियों की मनभावनी वस्तुएं आएंगी; और मैं इस भवन को अपनी महिमा के तेज से भर दूंगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है। (हागै २:७) वह जिसे सारे राष्ट्र चाहते हैं, इसराइल का पवित्र परमेश्वर यीशु मसीह जब आकर पृथ्वी पर खड़ा होगा तो हम अपने पुनर्जीवित शरीर में उसे देखेंगे। अय्यूब ने कहा - **25 मुझे तो निश्चय है, कि मेरा छुड़ाने वाला जीवित है, और वह अन्त में पृथ्वी पर खड़ा होगा। 26 और अपनी खाल के इस प्रकार नाश हो जाने के बाद भी, मैं शरीर में हो कर ईश्वर का दर्शन पाऊंगा। 27 उसका दर्शन मैं आप अपनी आंखों से अपने लिये करूंगा, और न कोई दूसरा। यद्यपि मेरा हृदय अन्दर ही अन्दर चूर चूर भी हो जाए, तौभी मुझ में तो धर्म का मूल पाया जाता है!** (अय्यूब १९:२५-२७) उसका पृथ्वी पर दूसरी बार आना, शान्ति का समय लेकर आयेगा।

इस पठन में हम देखेंगे कि बाईबिल उन हजार सालों के लिए जो न्याय संगत, आनन्द से परिपूर्ण और शान्ति से भरे राजाओं के राजा यीशु के राज्य में होंगे क्या कहती है।

प्रश्न १) आज के समाज में कितनी आत्मिक भूख है, इसके लिए आपके पास क्या प्रमाण है? हमारे समाज में इस आत्मिक भूख को किस प्रकार व्यक्त किया जाता है?

### **शान्ति के हजार वर्ष -**

तीसरी कड़ी में हमने शरीर के पुनरुत्थान के विषय में पढ़ा था, जिसमें हमने जाना था कि जब प्रभु यीशु का पुनरुत्थान होगा सन्तों का पुनरुत्थान होगा। वह लोग जो पुनरजीवित होंगे उनको सामर्थी व अविनाशी शरीर तथा अनन्त जीवन प्रदान होगा।

यह शरीर प्रभु यीशु के जीवित शरीर की तरह होगा। एक ऐसा शरीर जो पहले नकारा गया किन्तु फिर स्तुति में उठाया गया हो (१ कुरिन्थियों १५:५३) हमें बताया गया है कि संतो को यह अधिकार मिला है कि वह प्रभु यीशु के साथ मिलकर एक हजार वर्ष तक राज्य करेंगे (प्रकाशित वाक्य २०:४, १ कुरिन्थियों ६:२) और शैतान को बाँधकर नरक में फेंक दिया जाएगा। (प्रकाशित वाक्य २०:१-३)

फिर मैं ने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा; जिस के हाथ में अथाह कुंड की कुंजी, और एक बड़ी जंजीर थी। 2 और उस ने उस अजगर, अर्थात् पुराने सांप को, जो इब्लीस और शैतान है; पकड़ के हजार वर्ष के लिये बान्ध दिया। 3 और उसे अथाह कुंड में डाल कर बन्द कर दिया और उस पर मुहर कर दी, कि वह हजार वर्ष के पूरे होने तक जाति जाति के लोगों को फिर न भरमाए; इस के बाद अवश्य है, कि थोड़ी देर के लिये फिर खोला जाए। 4 फिर मैं ने सिंहासन देखे, और उन पर लोग बैठ गए, और उन को न्याय करने का अधिकार दिया गया; और उन की आत्माओं को भी देखा, जिन के सिर यीशु की गवाही देने और परमेश्वर के वचन के कारण काटे गए थे; और जिन्होंने ने न उस पशु की, और न उस की मूरत की पूजा की थी, और न उस की छाप अपने माथे और हाथों पर ली थी; वे जीवित हो कर मसीह के साथ हजार वर्ष तक राज्य करते रहे। 5 और जब तक ये हजार वर्ष पूरे न हुए तक तक शेष मरे हुए

न जी उठे; यह तो पहिला मृत्कोत्थान है। 6 धन्य और पवित्र वह है, जो इस पहिले पुनरुत्थान का भागी है, ऐसों पर दूसरी मृत्यु का कुछ भी अधिकार नहीं, पर वे परमेश्वर और मसीह के याजक होंगे, और उसके साथ हजार वर्ष तक राज्य करेंगे॥ (प्रकाशित वाक्य २०:१-६)

धर्म शास्त्री और विद्वान इस हजार साल के प्रभु यीशु के राज्य को सहस्राब्दि कहते हैं। सहस्राब्दि का अर्थ है एक हजार। इस पर तीन तरह की बातें मानी जाती हैं। पहला अमिलेनि एस्म कहलाता है। यह वह व्यक्ति है जो यह मानता है कि एक हजार वर्ष, जो लगभग पाँच ऊपर दिए गए पदों में लिखा गया है, वास्तविक रूप में प्रतीकात्मक अंक नहीं है, परन्तु यह एक ऐसे समय को दर्शाता है जो आज का समय है, एक कलीसिया का युग।

दूसरा, सहस्राब्दि के बाद का समय। इस विश्वास को मानने वाले जन भी यह समझते हैं कि यह समय जिसे एक हजार वर्ष का समय माना जाता है जैसे कि ऊपर बताया गया है, वास्तव में एक हजार वर्ष नहीं हैं। उनके विचार से कलीसिया अपने अनुयायीयों के लिए सुनहरा युग लाएगी और फिर उसके बाद प्रभु यीशु का पुनः आगमन होगा। तीसरा, सहस्राब्दि से पहले का समय जिसमें मैं स्वयं विश्वास करता हूँ। इस पर विश्वास करनेवाले विश्वास करते हैं कि प्रभु यीशु का पुनः आगमन सताव के बाद होगा और परमेश्वर उन संतो को पुर्नजिवित कर देगा, जो आत्मा के द्वारा पुर्नजिवित होंगे, और यह संत परमेश्वर के साथ पृथ्वी पर एक हजार वर्ष तक राज्य करेंगे। वह दैत्य, जिसे हम सर्प के नाम से जानते हैं। जो, अदन के बाग में आया था तथा जिसको शैतान का नाम दिया जाता है, उसे बाँध दिया जायेगा पद ३ के अनुसार "अथाह कुंड" में (अबुओस - यह एक यूनानी शब्द है जिसका अर्थ है एक ऐसी गहराई जिसका कोई अन्त न हो, जो कभी सोचा न जा सके और न ही माँपा जा सके)। एन एक हजार सालों में कोई भी युद्ध नहीं होगा, और फिर कुछ समय के लिए शैतान को मुक्त कर दिया जाएगा।

प्रश्न २) कलपना कीजिए कि तब हमारी दुनिया कैसी होगी, जब शैतान को बाँध दिया जाएगा। आप क्या सोचते हैं, कि उन लोगों के जीवन में क्या अन्तर आयेगा जो तब इस पृथ्वी पर होंगे और शैतान के चंगुल से कुछ समय के लिए मुक्त हो जायेंगे?

संतों के लिए, जो परमेश्वर की देह है, वह अपने पुर्नजिवित देह में किसी भी प्रकार के पाप और बुराई के लालच से मुक्त होंगे। वचन हमें बताता है, कि जब शैतान को "अथाह कुंड" में डाल दिया जाएगा, तो पृथ्वी में किसी भी प्रकार का धोखा नहीं होगा (पद ३)। हमारा पुर्नजिवित शरीर हमसे किसी भी प्रकार की हानि के भय को निकाल देगा। हमारी पाप की प्रकृति हमसे ले ली जाएगी और हमारी पाप करने की इच्छा समाप्त हो जाएगी। मृत्यु का भय समाप्त हो जाएगा क्योंकि हम बंधन मुक्त होकर काम करेंगे और हमारी रचनात्मक अपनी चर्म सीमा पर होगी। हम अपने शरीर, आत्मा और मास्तिष्क से कुछ इस प्रकार कार्य करेंगे जैसे हमने पहले कभी नहीं किया होगा, सब बंधनों से मुक्त होकर। हम जीवन को उस रूप में अनुभव करेंगे जैसे परमेश्वर चाहता है। उसी क्षण से, जब प्रभु यीशु का पुर्नगमन होगा सभी संत अमर हो जायेंगे। हमें यह बताया गया है कि सारी सृष्टि उस समय की प्रतीक्षा कर रही है जब हम सब, जो प्रभु में हैं, अपना अविनाशी शरीर, जो कभी भ्रष्ट नहीं होगा पहन लेंगे। (१ कुरिन्थियों १५:५४) उस समय प्राणी-जगत में कुछ अलग ही बदलाव आएंगे।

19 क्योंकि सृष्टि बड़ी आशाभरी दृष्टि से परमेश्वर के पुत्रों के प्रगट होने की बाट जोह रही है।

20 क्योंकि सृष्टि अपनी इच्छा से नहीं पर आधीन करने वाले की ओर से व्यर्थता के आधीन

इस आशा से की गई। 21 कि सृष्टि भी आप ही विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर, परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त करेगी। 22 क्योंकि हम जानते हैं, कि सारी सृष्टि अब तक मिलकर कराहती और पीड़ाओं में पड़ी तड़पती है। (रोमियो ८:१९-२२)

जब पौलूस ने रोम की कलीसिया को सृष्टि के बारे में पत्र लिखा, तब मैं सोचता हूँ कि आखिर उसके मन में क्या था। शायद वो उस प्राणी-जगत के बारे में कह रहा था जो मनुष्य से डरते हैं। नैतिक पतन से अब तक मनुष्य और जानवरों के बीच का संबंध खराब हो चुका है। आज हम देखते हैं कि किस प्रकार कृषि तथा जानवरों को पालने की नई तकनीकें पूरी सृष्टि को पीड़ा पहुँचा रही हैं। यह परमेश्वर की योजना नहीं थी, मनुष्य के साथ-साथ जानवर भी आज के युग में कष्ट भोग रहे हैं। वह अन्दर ही अन्दर कराह रहे हैं तथा उनके अन्दर मनुष्य व अन्य जीव के प्रति भय उत्पन्न हो गया है। तथा वह भी परमेश्वर के पुर्नर्गमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि कब सहस्राब्दि का आगमन होगा।

1 तब यिश्शै के ठूठ में से एक डाली फूट निकलेगी और उसकी जड़ में से एक शाखा निकल कर फलवन्त होगी। 2 और यहोवा की आत्मा, बुद्धि और समझ की आत्मा, युक्ति और पराक्रम की आत्मा, और ज्ञान और यहोवा के भय की आत्मा उस पर ठहरी रहेगी। 3 ओर उसको यहोवा का भय सुगन्ध सा भाएगा। वह मुंह देखा न्याय न करेगा और न अपने कानों के सुनने के अनुसार निर्णय करेगा; 4 परन्तु वह कंगालों का न्याय धर्म से, और पृथ्वी के नम्र लोगों का निर्णय खराई से करेगा; और वह पृथ्वी को अपने वचन के सोंटे से मारेगा, और अपने फूंक के झोंके से दुष्ट को मिटा डालेगा। 5 उसकी कटि का फेंटा धर्म और उसकी कमर का फेंटा सच्चाई होगी। 6 तब भेड़िया भेड़ के बच्चे के संग रहा करेगा, और चीता बकरी के बच्चे के साथ बैठा रहेगा, और बछड़ा और जवान सिंह और पाला पोसा हुआ बैल तीनों इकट्ठे रहेंगे, और एक छोटा लड़का उनकी अगुवाई करेगा। 7 गाय और रीछनी मिलकर चरेंगी, और उनके बच्चे इकट्ठे बैठेंगे; और सिंह बैल की नाई भूसा खाया करेगा। 8 दूधपिउवा बच्चा करैत के बिल पर खेलेगा, और दूध छुड़ाया हुआ लड़का नाग के बिल में हाथ डालेगा। 9 मेरे सारे पवित्र पर्वत पर न तो कोई दुःख देगा और न हानि करेगा; क्योंकि पृथ्वी यहोवा के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसा जल समुद्र में भरा रहता है। 10 उस समय यिश्शै की जड़ देश देश के लोगों के लिये एक झण्डा होगी; सब राज्यों के लोग उसे ढूंढ़ेंगे, और उसका विश्रामस्थान तेजोमय होगा। (यशायाह ११:१-१०)

यशायाह नबी बताते हैं कि वह जन आ रहे हैं जो बदलाव ले कर आएंगे। यह वह नहीं जब कलीसिया बुराई को पराजित करेगी, किन्तु यह वह कोपल है जो यिश्शै की डाली से निकलती है वह राजा दाऊद के पिता के बारे में बोलती है कि दाऊद के वंश में एक ऐसा राजा आएगा जो पृथ्वी पर न्याय करेगा। यह प्रभु येशु मसीह हैं जो केवल देखी और सुनी हुई चीजों पर न्याय नहीं करेगा, वह तो कठिन परिस्थितियों का उत्तम न्याय करेगा क्योंकि वह न्यायी और सर्व ज्ञानी है। वह न्यायसंगत राज्य करेगा। वह इस पृथ्वी पर आये और उन्होंने अमानवता और अन्याय को सहा तथा उस पर प्रभुत्व हासिल किया। उन के पास कुछ भी कहने और अपने शब्दों द्वारा कुछ भी सृजन करने की सामर्थ्य है वह अपने श्वास के द्वारा कुछ भी रच सकता है तथा बुराई का अन्त भी करेगा। “परन्तु उसके आने के

दिन की कौन सह सकेगा? और जब वह दिखाई दे, तब कौन खड़ा रह सकेगा? क्योंकि वह सोनार की आग और धोबी के साबुन के समान है।” (मलाकी ३:२)

जब वह राजगद्दी पर विराजमान होंगे तब हम सब बहुत से बदलाव देखेंगे विपरीत प्रकृति के जंगली जानवर एक दूसरे के साथ भोजन करेंगे। भेड़िये और भेड़ साथ-साथ सोएंगे और साथ-साथ रहेंगे। शेर, जो इस पृथ्वी का माँसाहारी जीव है, घास खायेगा, जैसे कि एक भैंसा खाता है। फिर छोटे बच्चे साँप के बिल में हाथ डालेंगे और उनके साथ खेलेंगे। जब भविष्यवाणी ६०० वर्ष पूर्व की गई थी तब इसराइल में बहुत से जंगली जानवर थे, परन्तु यशायाह नबी ने भविष्यवाणी की थी कि एक समय ऐसा भी होगा जब बच्चे जंगली जानवरों के साथ खेलेंगे और पृथ्वी पर शांति होगी। यशायाह कहते हैं कि "गोयिम" वह राज्य जो गैर यहूदी हैं, भी विश्वास करेंगे, जब परमेश्वर का ज्ञान पूरी पृथ्वी पर फैल जायेगा। और उसका विश्राम महिमामय होगा। वह एक हजार साल विश्राम के दिन होंगे और वह प्रार्थना, कि पृथ्वी पर शांति और सद्भावना बनी रहे, पूरी हो जायेगी। ईश्वर की उपस्थिति और उसका शासन पृथ्वी पर यह पूरा करेगा तथा उसकी पूरी सृष्टि शांति पूर्वक रहेगी।

प्रश्न ३) यशायाह ११:९ बताता है कि: “पृथ्वी यहोवा के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसा जल समुद्र में भरा रहता है।” इस पद का क्या अर्थ है इस पर चर्चा करें। आप कैसे सोचते हैं कि परमेश्वर का ज्ञान पृथ्वी पर फैलेगा और उसका असर क्या होगा?

### **एक नई पृथ्वी और नया स्वर्ग**

नबी यशायाह आगे उस समय के बारे में फिर कहते हैं (६५:१७-२५) जब पृथ्वी पर बड़े-बड़े बदलाव आयेंगे:

17 क्योंकि देखो, मैं नया आकाश और नई पृथ्वी उत्पन्न करने पर हूँ, और पहिली बातें स्मरण न रहेंगी और सोच विचार में भी न आएंगी। 18 इसलिये जो मैं उत्पन्न करने पर हूँ, उसके कारण तुम हर्षित हो और सदा सर्वदा मगन रहो; क्योंकि देखो, मैं यरूशलेम को मगन और उसकी प्रजा को आनन्दित बनाऊंगा। 19 मैं आप यरूशलेम के कारण मगन, और अपनी प्रजा के हेतु हर्षित हूंगा; उस में फिर रोने वा चिल्लाने का शब्द न सुनाई पड़ेगा। 20 उस में फिर न तो थोड़े दिन का बच्चा, और न ऐसा बूढ़ा जाता रहेगा जिसने अपनी आयु पूरी न की हो; क्योंकि जो लड़कपन में मरने वाला है वह सौ वर्ष का हो कर मरेगा, परन्तु पापी सौ वर्ष का हो कर श्रपित ठहरेगा। 21 वे घर बनाकर उन में बसेंगे; वे दाख की बारियां लगाकर उनका फल खाएंगे। 22 ऐसा नहीं होगा कि वे बनाएं और दूसरा बसे; वा वे लगाएं, और दूसरा खाए; क्योंकि मेरी प्रजा की आयु वृक्षों की सी होगी, और मेरे चुने हुए अपने कामों का पूरा लाभ उठाएंगे। 23 उनका परिश्रम व्यर्थ न होगा, न उनके बालक घबराहट के लिये उत्पन्न होंगे; क्योंकि वे यहोवा के धन्य लोगों का वंश ठहरेंगे, और उनके बाल-बच्चे उन से अलग न होंगे। 24 उनके पुकारने से पहिले ही मैं उन को उत्तर दूंगा, और उनके मांगते ही मैं उनकी सुन लूंगा। 25 भेड़िया और मेम्ना एक संग चरा करेंगे, और सिंह बैल की नाई भूसा खाएगा; और सर्प का आहार मिट्टी ही रहेगा। मेरे सारे पवित्र पर्वत पर न तो कोई किसी को दुःख देगा और न कोई किसी की हानि करेगा, यहोवा का यही वचन है। (यशायाह ६५:१७-२५)

परमेश्वर कहता है कि तब एक नई पृथ्वी तथा नया स्वर्ग भी होगा। इन शब्दों का क्या अर्थ है? एक नज़र में इसे देखकर यह कह सकते हैं कि शायद हम सब किसी दूसरे गृह पर भेजे जायेंगे, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है। रेन्डी एल्कार्न ने अपनी पुस्तक "स्वर्ग" में कहा है कि "स्वर्ग और पृथ्वी" कि अभिव्यक्ति बाईबिल की एक उपाधी है, जो पूरे संसार को व्यक्त करती है:- वह कहते हैं

प्राकशित्वाक्य २१:१ में "एक नये स्वर्ग और एक नई पृथ्वी" के बारे में बताया गया है। तब यह पूरे संसार के रूपांतरण का एक संकेत है। युनानी शब्द "कायनौस" जिसका अर्थ है "नया" यह संकेत करता है कि परमेश्वर द्वारा रचित यह पृथ्वी अचानक ही नयी नहीं हो जायेगी, परन्तु उसमें कुछ नया और बेहतर बदलाव होगा। वॉल्टर बेयोर के अनुसार कायनौस का अर्थ है (नया) कि जो पुराना है तथा अप्रचलित हो गया है उसको एक नये रूप में बदलना चाहिये। ऐसे में, नियम के अनुसार नया रूप पुराने से बेहतर और उत्कृष्ट होगा। इसका अर्थ है, कि "एक नए संसार" की रचना नहीं की जाएगी परन्तु एक ऐसे संसार की सृष्टि होगी जो महिमा में नई की गयी है और जो पुराने से परिपूर्ण होकर नयापन लेगी।" पौलूस ने भी कायनौस शब्द का प्रयोग किया है जब वह एक विश्वासी के "एक नई रचना" बनने की बात करते हैं (२ कुरिन्थियों ५:१७)। नई पृथ्वी पुरानी पृथ्वी के समान ही होगी बिलकुल उसी प्रकार जैसे कि एक नया विश्वासी वही व्यक्ति रहता है, जब वह अविश्वासी था फ़रक पर फिर भी वही व्यक्ति।

जिस प्रकार पृथ्वी शताब्दियों के जैसी है उसमें कुछ न कुछ बदलाव आते रहते हैं। जिन्हें लोग याद रखते हैं तथा पुरानी चीज़ों को भूल जाते हैं। एक समय ऐसा होगा जब पूरे बदलाव और नवीनीकरण किया जायेगा। एक नये स्वर्ग का शायद यही अर्थ है कि शत्रु का विनाश होगा और उसके रहने के स्थान को, जहाँ उसने हमे नष्ट करने के लिए मोर्चा बाँधा था, ध्वस्त किया जायेगा। इस समय तक हम शैतान को वायु की शक्ति का राजकुमार कहते हैं। (इफ़िसियों २:२) लूका जब प्रेरितों के कार्य लिख रहे थे, तब उन्होंने कहा कि, (प्रेरितों के काम ३:२१) पृथ्वी फिर से अपनी प्राचीन सुन्दरता की चादर ओढ़ लेगी तथा अपनी सुन्दरता चारों ओर बिखरेगी। वह लोग जो सहस्राब्दि में जीवित रहेंगे वह अपने कार्य के फल को भोगेंगे, जो वह बोएंगे वही काटेंगे। जो वह बनायेंगे वही उनका होगा तथा वह उसी में रहेंगे।

जब यीशु पुनः आगमन के समय आयेंगे और सब सन्त पुनर्जीवित हो जायेंगे तब पृथ्वी की जनसंख्या, जैसे कि मैं देखता हूँ, पूरी तरह से समाप्त नहीं होगी। संतो के जी उठने एंव पुनः आगमन के उपरान्त परमेश्वर का क्रोध बह निकलेगा, सारे स्वर्गदूत सभी प्राकार की बुराईयों को परमेश्वर के राज्य से उखाड़ फेंकेगें" (मत्ति १३:४१) मैं समझता हूँ कि, सहस्राब्दि के समय भी वह लोग इस पृथ्वी पर होंगे जो बचाए नहीं गए। जब हम यीशु के पुर्नागमन का इन्तज़ार करेंगे तब हमारे सामने तीन चुनौतिया होंगी, यह हैं पृथ्वी, हमारी पापमयी प्रवृत्ति और शैतान।

उन विनाशी प्राणीयों को जो अभिशापित हैं और शैतान द्वारा दिए गए किसी भी प्रकार के लालच और लोभ का सामना नहीं कर सकते, यह समय, अन्तिम निर्णय से पहले सब कुछ पुर्नस्थापित करने का होगा। यह समय एक आशीशित समय होगा, बिलकुल उसी प्रकार जैसे कि हजारों वर्ष पूर्व उत्पत्ति की पुस्तक में लोगों के जीवन के बारे

में बताया गया है। आदम १३० वर्ष तक जीवित रहा (उत्पत्ति ५:५) सेथ ९१२ वर्ष तक (उत्पत्ति ५:८) और मैथ्यू सेलाहा ९६९ वर्ष तक (उत्पत्ति ५:७) जीवित रहे। वह जो छुड़ाए नहीं गए हैं, उनको उस महान सफ़ेद न्याय की गद्दी का सामना करना होगा, जो सहस्राब्दि के अन्त में होगा। वह सन्त जो परमेश्वर के आत्मा के द्वारा पुर्नजीवित होंगे, वह कभी नहीं मरेंगे और हमेशा की ज़िन्दगी पाएंगे। वह अविनाशी हैं। (१ कुरिन्थियों १५:५२)

मैं स्वर्ग और सहस्राब्दि के अन्तर को स्पष्ट कर देता हूँ। सहस्राब्दि वह समय है जब हम परमेश्वर का राज्य इस पृथ्वी पर अनुभव करेंगे, परन्तु तब हमें और भी बहुत कुछ अनुभव करना होगा। हमें यह बताया गया है कि सहस्राब्दि के अन्त में एक नया येरुशलम आएगा जहाँ मृत्यु नहीं होगी -

1 फिर मैं ने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहिला आकाश और पहिली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा। 2 फिर मैं ने पवित्र नगर नये येरुशलम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुल्हिन के समान थी, जो अपने पति के लिये सिंगार किए हो। 3 फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को ऊंचे शब्द से यह कहते सुना, कि देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है; वह उन के साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उन के साथ रहेगा; और उन का परमेश्वर होगा। 4 और वह उन की आंखोंसे सब आंसू पोंछ डालेगा; और इस के बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहिली बातें जाती रहीं। (प्रकाशित वाक्य २१:१-४)

वचन का सार उद्धार के एक दृष्य के रूप में है। यीशु जब क्रूस पर हमारे पापों के लिए मरे, उन्होंने केवल पाप का दण्ड समाप्त नहीं किया उन्होंने अपने जीवन के द्वारा पाप का ऋण चुकाया पाप का संपूर्ण ऋण। अब जब दिव्य न्याय को पूरी संतुष्टि मिल गई यीशु के पास हर एक वस्तु को उसके सही कार्य के लिए पुनः स्थापित करने का अधिकार है, उसकी नियत महिमा के लिए। जब वह राज करने के लिए आयेगा तब वह हर एक वस्तु को उसकी सही जगह पर निर्धारित करेगा और हम इस सृष्टि को पूर्ण रूप से पाप मुक्त होते हुए देखेंगे। उसने पृथ्वी को ऋण मुक्त किया है, और अब पृथ्वी परमेश्वर के ज्ञान से परिपूर्ण हो जाएगी। बहुत से देश येरुशलम में आ जाएंगे तथा वह इस पृथ्वी की राजधानी होगी। जहाँ लोग परमेश्वर को ढूँढेंगे और उसकी आराधना करेंगे। तब और कोई दूसरा धर्म नहीं होगा और सब लोग यह जान जाएंगे कि यह शैतान की योजना थी कि वह धर्म के नाम पर हमें अलग-अलग करके हम पर राज्य कर रहा था। सभी जन समझ जाएंगे कि केवल एक ईश्वर है और उसका ज्ञान सर्वभौमिक हो जाएगा। येरुशलम नगर पूरी तरह से बदल जाएगा तथा परमेश्वर स्वयं वहाँ होंगे:

अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि यहोवा के भवन का पर्वत सब पहाड़ों पर दृढ़ किया जाएगा, और सब पहाड़ियों से अधिक ऊंचा किया जाएगा; और हर जाति के लागे धारा की नाई उसकी ओर चलेंगे। 3 और बहुत देशों के लोग आएं, और आपस में कहेंगे: आओ, हम यहोवा के पर्वत पर चढ़कर, याकूब के परमेश्वर के भवन में जाएं; तब वह हम को अपने मार्ग सिखाएगा, और हम उसके पथों पर चलेंगे। क्योंकि यहोवा की व्यवस्था सिय्योन से, और उसका वचन येरुशलम से निकलेगा। 4 वह जाति जाति का न्याय करेगा, और देश देश के लोगों के झगड़ों को मिटाएगा; और वे अपनी तलवारें पीट कर हल के फाल और अपने भालों



को हंसिया बनाएंगे; तब एक जाति दूसरी जाति के विरुद्ध फिर तलवार न चलाएगी, न लोग भविष्य में युद्ध की विद्या सीखेंगे॥ (यशायाह २:२-४)

कल्पना कीजिए उस पृथ्वी की जहाँ प्रभु यीशु मसीह राज्य करेंगे और अपनी राज गद्दी पर विराजित होंगे। किसी भी तरह की तोप, बन्दूक या लड़ाई की सामग्री की आवश्यकता नहीं होगी, क्योंकि सब जगह आर्थिक रूप से समृद्ध होगी। क्योंकि मनुष्य अब लड़ाई के लिए तैयारी नहीं करेगा (यशायाह २:४)। यीशु मसीह अपनी सरकार की स्थापना करेंगे जिसे वह सन्तों के द्वारा बनायेंगे। हर एक देश के दूसरे देश से शान्तिपूर्वक संबंध होंगे और यीशु मसीह राजगद्दी पर विराजमान होंगे। वह लोग जो विभिन्न सम्राज्य, देश, प्रांत, शहर व कस्बों पर राज्य करेंगे, केवल वह ही होंगे, जो बुराई से बचे रहेंगे और परमेश्वर के लोगों की देखभाल करेंगे।

हमें यह बताया जाता है कि येरुशलेम अपने चारों ओर की पहाड़ीयों से भी ऊँचा हो जायेगा। अभी हम ज़ैतून की पहाड़ी से जो पूरव की ओर है, नीचे येरुशलेम को देख सकते हैं। परन्तु यह हो सकता है कि किसी भूवैज्ञानिक गतिविदी के कारणवश तब येरुशलेम ऊपर उठ जाएगा। प्रभु यीशु मसीह हमें अपने तौर तरीके सिखायेंगे और राज्यों के मध्य में जो कुछ भी मतभेद रह जायेंगे उन्हें भी वह समाप्त कर देंगे। वचन बताता है कि नया येरुशलेम इस पृथ्वी पर तब तक नहीं आयेगा जब तक कि एक हजार वर्ष पूरे नहीं हो जायेंगे। (प्रकाशित वाक्य २१:१-२) तब तक यीशु मसीह का सिंहासन येरुशलेम में रहेंगा। जहाँ बहुत से लोग राजा यीशु के स्तूति और आराधना करने आयेंगे। (यशायाह २:२-३) यशायाह नबी कहते हैं, “तू अपनी आंखों से राजा को उसकी शोभा सहित देखेगा; और लम्बे चौड़े देश पर दृष्टि करेगा।” (यशायाह ३३:१७) क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि आप यीशु के चरणों में बैठे हैं और वह हम सब को अपनी शिक्षा दे रहा है? वह हमें अपने मार्ग के निर्देश देंगे ताकि हम उसके बताए हुए मार्ग पर चल सके। (यशायाह २:३)

अन्त में इस्राइल तथा फिलिस्तीन के मुद्दों का समाधान हो जाएगा और याकूब तथा असाऊ के भाईयों के बीच शान्ति हो जायेगी, इस्राइल और अरब के बीच:-

23 उस समय मिस्र से अशशूर जाने का एक राजमार्ग होगा, और अशशूरी मिस्र में आएंगे और मिस्री लोग अशशूर को जाएंगे, और मिस्री अशशूरियों के संग मिलकर आराधना करेंगे॥ 24 उस समय इस्राएल, मिस्र और अशशूर तीनों मिलकर पृथ्वी के लिये आशीष का कारण होंगे। 25 क्योंकि सेनाओं का यहोवा उन तीनों को यह कह कर आशीष देगा, धन्य हो मेरी प्रजा मिस्र, और मेरा रचा हुआ अशशूर, और मेरा निज भाग इस्राएल॥ (यशायाह १९:२३-२५)

अन्त में हम सब पृथ्वी के हर एक भाग में शान्ति देखेंगे। लालच, स्वार्थ, घर्णा समाप्त हो जाएगी और शान्ति बहाल हो जायेगी तथा परमेश्वर के वचन का ज्ञान इस पृथ्वी पर फैल जायेगा, बिलकुल उसी प्रकार जैसे समुद्र में पानी फैल जाता है।

**प्रार्थना:** पिता, हम आपको आपकी छुटकारे की योजना के लिए धन्यवाद देते हैं। हम प्रार्थना करते हैं कि हम अपने जीवन के सच्चे धन को यहाँ और अभी देख पायें। हम आपसे दया तथा शान्ति चाहते हैं जो आप हमें देंगे जिसे आप चाहते हैं कि हम अपने जीवन में अनुभव करें तथा दूसरों के साथ बाँटें। हम सब यही प्रार्थना करते हैं।

"तेरा राज्य आये, जैसे इच्छा स्वर्ग में पूरी होती है, वसे ही पृथ्वी पर भी पूरी हो"